भ्रष्टाचार के बावजूद बेहतर है चीन

भारत में रिश्वत देने के बावजूद इस बात की गारंटी नहीं है कि काम हो जाएगा। कई स्तर पर फाइल को रोक लेने की क्षमता (मूल रूप से यह प्रथा उपनिवेशवादी सरकार की संदेहवादी प्रवृत्तियों के कारण आई) के कारण कपटपूर्ण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है और हमारा भ्रष्टाचार विकास के लिहाज से बेकार साबित होता है

■ **प्रणव वर्धन**

चीन के सर्वाधिक तेजी से विकास कर रहे शहरों में से एक चोंगछींग में बीते दिनों भ्रष्टाचार के एक मामले में एक अरबपति राजनेता के साथ ही उसके सहयोगियों और साथियों (नौकरशाह, न्यायाधीश, पुलिसकर्मी और अपराधियों) के खिलाफ सुनवाई हुई। सुनवाई के दौरान राजनीतिज्ञों, कारोबारियों और अपराधियों के बीच ऐसे गठजोड़ का खुलासा हुआ, जो आमतौर पर भारत में देखने को नहीं मिलता है। दोनों ही देशों में भ्रष्टाचार की जड़ें काफी गहरी हैं, और इस संदर्भ में मैं हमेशा यह सोचता हूं कि सभी तरह के भ्रष्टाचार के बावजूद चीन का आर्थिक प्रदर्शन भारत के मुकाबले काफी बेहतर क्यों है। (ठीक ऐसा ही सवाल इससे पहले 1960 के दशक में दक्षिण कोरिया और ताइवान के बारे में पूछा जाता था, उस दौरान दोनों ही देशों में व्यापक भ्रष्टाचार व्याप्त था)।

जाहिर तौर पर इस मामले में, पूर्वी एशिया इतिहास में अकेला नहीं है। यूरोपीय इतिहास में बिक्री अधिकारों में एकाधिकार, कर सुविधाओं तथा सार्वजनिक संसाधनों तक आसान पहुंच के रूप में उद्यमी वर्ग को विशेष तरजीह दी गई।

उन्नीसवीं सदी के अंत में अमेरिका में राज्य विधायिका और नगरीय प्रशासन में भारी भ्रष्टाचार फैला था जो विभिन्न कारोबारी हितों को साधने के काम आता था। भ्रष्टाचार सार्वजनिक सेवाओं की फ्रैंचाइजी हासिल करने का माध्यम बन गया था। इसके बावजूद अमेरिका ने तरक्की की। लेकिन इस बारे में विचार करना रोचक है कि कई मायनों में हमारा भ्रष्टाचार मात्रात्मक रूप से पूर्वी एशिया और उनके आर्थिक प्रयासों से अलग है। पहली बात, चीन में अधिकारियों का वरीयता क्रम अधिक स्पष्ट है, जबकि भारत में किसी एक फैसले पर विभिन्न अधिकारियों के पास बहुपक्षीय वीटो पावर है।

एक काल्पनिक कहानी के मुताबिक नई दिल्ली में एक उच्च अधिकारी ने एक बार अपने दोस्त से कहा, अगर आप चाहते हैं कि मैं इस फाइल को तेजी से आगे बढ़ाने में आपकी मदद करूं तो मुझे पूरा भरोसा नहीं है कि मैं आपकी कुछ मदद कर सकता हूं, लेकिन अगर आप किसी फाइल को रोकने में मेरी मदद चाहते हैं तो मैं ऐसा तुरंत कर सकता हूं।

इसलिए भारत में रिश्वत देने के बावजूद इस बात की गारंटी नहीं है कि काम हो जाएगा। कई स्तर पर फाइल को रोक लेने की क्षमता (मूल रूप से यह प्रथा उपनिवेशवादी सरकार की संदेहवादी प्रवृत्तियों के कारण आई) के कारण कपटपूर्ण भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है और हमारा भ्रष्टाचार विकास के लिहाज से बेकार साबित होता है। इस प्रणाली की एक शाखा संस्थागत संदेह है, जो भारतीय नौकरशाही में मुखर फैसलों के लिए की जाने

वाली पहल को हतोत्साहित करती है।

अगर एक शीर्ष नौकरशाह अच्छा काम करता है तो उसे मामूली सा पुरस्कार ही मिलता है, लेकिन अगर किसी फैसले के कारण कोई परियोजना असफल हो जाती है तो उसे केंद्रीय सतर्कता आयोग या केंद्रीय जांच ब्यूरो के सवालों का सामना करना पड़ता है (अक्सर इस बात में अंतर कर पाना काफी मुश्किल होता है कि कौन सा फैसला बस यूं ही काम नहीं कर पाया और कौन सा फैसला भ्रष्ट इरादों के साथ लिया गया था)।

ऐसे में भारतीय लोक सेवा काफी जोखिमपूर्ण है और नए फैसले करना इतना आसान नहीं है। ऐसे में एक तरह की संस्थागत जड़ता कायम हो गई है और सोच यह बन गई है कि किसी नियुक्ति पर दो या तीन साल आराम से बिता दो, बेवजह की मेहनत क्यों करना? दूसरी बात यह है कि भारत के मुकाबले चीन में अधिकारियों को मिलने वाला पुरस्कार और पदोन्नति अधिक प्रत्यक्ष रूप से स्थानीय आर्थिक प्रदर्शन के साथ जुड़ी हुई है।

ऐसे में चीनी अधिकारी कुल प्रदर्शन के रिकॉर्ड को आसानी से बिगड़ने नहीं देते हैं। पेइचिंग की यात्रा के दौरान मैंने कई बार व्यक्तिगत रूप से चीन के अपने मित्रों से बड़ी सार्वजनिक ढांचागत परियोजनाओं में गबन के बारे में पूछा। इनमें से कोई भी अनुमान दस प्रतिशत से अधिक नहीं था। मैं आपको एक और काल्पनिक कहानी बताना चाहूंगा, जो मैंने बेल्जियम में सुनी।

कहानी इस तरह है- बेल्जियम में एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान शाम को एक रिसेप्शन का आयोजन किया गया था। एक अफ्रीकी मंत्री बेल्जियम के अपने मेजबान को एक किनारे ले गया और बोला कि अपने आधिकारिक वेतन से उसने इतनी बड़ी हवेली कैसे बना ली, जिसमें रिसेप्शन का आयोजन किया गया था।

बेल्जियम का मंत्री उसे एक झरोखे के किनारे ले गया और बाहर की ओर देखकर बोला, उस सड़क को देखो? - 10 प्रतिशत। फिर जैसा कि इस तरह की कहानियों में अक्सर होता है, एक या दो साल बाद ठीक उसी तरह का सम्मेलन अफ्रीका में आयोजित हुआ। अफ्रीकी मंत्री ने अपने घर पर रिसेप्शन का आयोजन किया।

> एक शीर्ष नौकरशाह अच्छा काम करता है तो उसे मामूली सा पुरस्कार ही मिलता है, लेकिन अगर किसी फैसले के कारण कोई परियोजना असफल होती है तो उसे केंद्रीय सतर्कता आयोग या केंद्रीय जांच ब्यूरो के सवालों का सामना करना पड़ता है

बेल्जियम के मंत्री ने अपने मेजबान से कहा कि इतनी आमदनी में उसने इतना बड़ा महल कैसे बना लिया। अफ्रीकी मंत्री बेल्जियम से आए मेहमान को झरोखे के किनारे ले गया और बोला, उस सड़क को देखो? बेल्जियम के मंत्री ने चारो तरफ देखा और कहा कि मुझे सड़क दिख नहीं रही है। इस पर अफ्रीकी मंत्री ने मुस्कराते हुए कहा,100 प्रतिशत।

चीनी राजनीतिक व्यवस्था में 100 प्रतिशत चोरी नहीं की जा सकती है, क्योंकि वहां अधिकारियों की पदोन्नति उस क्षेत्र के सकल आर्थिक प्रदर्शन पर निर्भर करती है, जहां का उन्हें प्रभारी बनाया गया है। तीसरी बात, दक्षिण कोरिया और ताइवान में पिछले शासनतंत्र के दौरान राजनीतिक मशीनरी और उसका भष्टाचार केंद्रीकृत था, जो विकेंद्रीकृत भ्रष्टाचार के मुकाबले कम घातक है।

सुहार्तो के शासनकाल में इंडोनेशिया में भारत के मुकाबले अधिक भ्रष्टाचार था लेकिन इसके बावजूद उसका सकल आर्थिक प्रदर्शन काफी बेहतर था। संभव है कि उस समय इंडोनेशिया का भ्रष्टाचार अधिक केंद्रीकृत था (जिस पर मोटे तौर से प्रथम परिवार और शीर्ष सैन्य अधिकारियों का नियंत्रण था)। भारत का भ्रष्टाचार अधिक विकेंद्रित है और अक्सर इसमें व्यापक रूप से अराजकता पाई जाती है।

आखिरकार, चुनावों के अधिक खर्चीला होने के साथ ही भारत में राजनीतिज्ञों के लिए धन की प्रधानता बढ़ती जा रही है। कॉर्पोरेट घरानों (और रियल एस्टेट कारोबारियों) द्वारा चुनावी फंड के लिए चंदा काफी महत्वपूर्ण हो गया है। यह चंदा अक्सर चोरी से लिया जाता है। इसका भ्रष्ट प्रभाव नीतियों पर पड़ना स्वाभाविक है।

फिर चाहें जमीन आवंटन का मामला हो, प्राकृतिक संसाधनों के आबंटन के अधिकारों में एकाधिकार हो या फिर दूरसंचार स्पेक्ट्रम या फिर पर्यावरण-प्रदूषण सहित सभी तरह के नियंत्रण हों, सभी जगह इसका प्रभाव देखने को मिलता है।

कोई भी व्यक्ति कम से कम इस बात पर सुकून व्यक्त कर सकता है कि भारत में संस्थागत प्रक्रिया और जांच (चुनावों, अदालतों और सूचना का अधिकार जैसे माध्यमों के जरिए) का प्रावधान तो है, जो कि अधिक प्रभावशाली हैं। ♦

(लेखक यूनिवर्सिटी ऑफ कैलिफोर्निया-बार्कले कॉलेज ऑफ लेटर्स ऐंड साइंस में पढ़ाते हैं।)